

Cat Mile Table

छूटक अध्ययनो.

आमां श्रावेला दश श्रध्ययनो सद्याय करवा योग जाणी तेने प्रभागत ध्रव करी ठप्तरी प्रतिष् करनार यादा बाइ ठगनलाल शाह ठेलीकालक्सी पोळ. प्रण्डमदााद

> (आयुत्ति ब्राजी) स्रवत रण्ड्ध—मने रूए००

Ahredabad-Shri Jain Printing Press

किमत वे घानाः



्छूटक अध्ययनो.

छाय श्री दशवैकाितक सृत्रनुं पहेतुं, वीजुं, त्रीजुं छाने चोथुं तथा उत्तराध्ययन सूत्रनुं पहेतुं, वीजुं, त्रीजुं छाने चोथुं; ए छाठे छाध्ययनो मृत्वपाठे प्रारंजः

(अनुष्ट्रसम्)

धम्मो मगल—मुक्तिं अहिंसा संजमो तवो ॥ देवावि तं नमंसति, जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥ जहा छमस्स पुप्केसु, जमरो खावियई रसं॥ न य पुष्फं किलामेई, सो य पीणेइ खप्पयं ॥२॥

एमे ए समणा मुत्ता, जे खोए सित साहुणो ॥ विह्गमाव पुफ्तेमु, दाण ज्ञत्तेसणे रया वर्ष च वित्ति खप्रामो, न य कोइ चवहम्मई॥

IJξII

uen

श्रहागमेष्ठ रीयते, पुष्केष्ठ न्नमरा जहा महुकार समा बुद्धा, जे नवंति श्रणिस्तिया ॥ नाणापिंक रया दता, तेण बुचिति साहुणो चि घेमि वृटक श्राप्ययनोः

इति डुम्मपुष्पिय नामं परम श्रञ्जयण सम्मत्त । कहं तु कुड़ता सामझ, जो कामे न निवारए ॥

पएपए विसीयतो, सकष्पस्त यसगर्ग

(१)

वह गध-मलकार, इन्नि संग्लालि य ॥

श्राव्या जेन जुजिति, न से चाइ ति बुचई ॥ १। ने य कते पिए जोए, बहे विधिष्ठ कुन्हें ॥ साहीणे चयई नोए से हुँ चाइ कि नुबई

दशवैकासिकंतु त्रीजुं अध्ययनः (अनुएप्रसम्) । पखंदे जिलयं जोइं, धूमकेंडं फ़ुरासयं ॥ नेइंति वंतय जुनं, कुले जाया श्रमधरो ॥६॥ धिरहु ते ऽजसोकामी, जो त जीविय कारणा ॥ वंतं इइसि ब्यावेडं, सेयं ते मरणं जवे ॥॥ **छहं च जोगरायस्स, तं च ऽसि श्रंधगविद्धि**षो ॥ मा कुले गंधणा होमो, संजम निहुर्ग चर ॥ण॥ जइ तं काहिसि नाव, जा जा दिग्रसि नारिन्नं॥ वाया विद्धोव इसो, अिष्ठयपा प्रविस्ससि ॥ए॥

तीसे सो वयणं सोचा, संजयाए सुजासियं ॥
अकुसेण जहा नागो, धन्मे सं पिनवाइनं ॥१०॥
एवं करित सबुद्धा, पंभिया पिवयस्कणा ॥
विणियहित जोगेसु, जहा से पुरिसोनमो नि वेमिरे१
इति सामत्रपुविय नामं वियं अध्ययणं सम्मत्तं ॥ १॥
सजमे सुनिअप्पाण, विष्य मुद्राण ताइण ॥
तेसि-मय-मणाइनं, निग्गंथाण महेसिणं ॥र॥
चंदेसियं कीयगम, नियाग अजिह्माणि यं॥
रायजने सिणाणे य, गथ महो य

तृरक अध्ययनोः (২) नाणापिंन रया दंता, तेण बुर्चति साहुणो वि वेमि ॥५॥ इति जुम्मपुष्फिय नामं पढम अञ्चयणं सम्मत्त ॥१॥ कहं तु कुजा सामझं, जो कामे न निवारए ॥ पएपए विसीयतो, संकप्पस्स वसगर्छ वह गंध-मलकार, इहिने सयणाणि य ॥ श्रद्धाजेन जुजति,न से चाइ त्ति बुचई ॥ १॥ जे य कते विए जोए, लड़्डे विध्यिष्ठ कुउई ॥ साहीणे चयर्ड झोए से हु चाइ नि वुचई แรแ (काच्यम्) समाइ पेहाइ परिवयनो सिया मणो निस्सरई वहिद्धा ॥

न सा मह नोवि अहिं तीसे, **इचेव ता**छे विशिएका रागं 11 8 11 आयावया ही चय सोगमञ्ज, कामे कमाही कमिय खु इस्क॥

विदाहि दोन विलिएका राग, एवं सुद्दी होहिसि सपराए n u's

दशवैकार्षिकनु त्रीजुं अध्ययनः

(अनुपुर्स्तम्) पखंदे जलियं जोइं, धूमकेंछं छुरासयं ॥ नेइंति वंतय छुनं, कुले जाया श्रमधरो ॥६॥ धिरह्य ते ऽजसोकामी, जो त जीविय कारणा ॥ वंतं इन्नसि स्रावेन, सेयं ते मरण जवे ॥॥॥ श्रहं च न्नोगरायस्स, तं च ऽसि श्रंधगविष्हणो ॥ मा कुले गधला होमो, सजमं निहुउं चर ॥ण॥ जइ तं काहिसि जाव, जा जा दिग्रसि नारिष्ठ ॥ वाया विद्धोव हमो, छाठिछणा जविस्ससि ॥ए॥ तीसे सा वयणं सोचा, संजयाए सुनासिय ॥ श्रकुसेण जहा नागो, धम्मे सं पनिवाइडी ॥१०॥ एवं करति सेंबुद्धा, पंक्तिया पवियक्कणा ॥ विखियहति जोगेसु, जहा से पुरिसोनमो नि वेमिर१ इति सामनपुरिय नामं वियं श्रद्ययणं सम्मत्तं ॥ २ ॥ संजमे सुविश्रपाण, विष्य मुकाण ताइण ॥ तेसि-मय-मणाञ्चं, निग्गंथाणं महेसिणं ॥१॥ **उ**देसियं कीयगमं, नियाग श्रनिहमाणि य ॥ रायनते सिषाणे य, गध मही य वीयणे ॥१॥

(४) वृदक खध्ययनो संनिद्धी गिहिमने य, रायपिने कि-मिन्नय ॥ (कान्यम्)

संवाहण दंत ×पहोवणा य, संयुद्धण देह पद्धीयणा य॥ (अनुष्टुर्खनम्)

श्रहावए य नासिए, उत्तरस य धारऽशहाए, तेगिन्नं ७वाहणा पाए, संमारंत्रं च जोइलो ॥॥ सिद्धावर पिनं च, खासदी पसियंकए ॥

गिहंतर निसिज्जाए, गायस्युवद्दषाणि य ॥५॥ गिहिलो वेयावित्तप, जाइ खाजीववित्तया ॥ तना-निहुम जोइन, खात्तर स्तरणाणि य ॥६॥ मृत्वए सिगवेरे य, जुष्ट खमे खनिहुमे ॥

करें मूले य सिंचत्ते, फले वीष य व्यामए ॥॥॥
सोवचले सिंधवेलीणे, रोमालीणे य व्यामए ॥
सामुद्दे पंछुलारे य, कालालीणे य व्यामए ॥०॥
धुर्वाणित वमणे य, बिंडकम्म विरेयणे ॥
अनुष्री दुरुगो स सामानम् विजयमे ॥॥॥

सामुद्दे पंक्षस्यारे य, कालालांषे य श्रामए ॥०॥ धृविषित्ति वमणे य, विडकम्म विरेवणे ॥ श्रुज्ञेल दतवणे य, गायाज्ञम विजूसणे ॥ए॥ सव-मेय-मलाइज्ञ, निग्गंथाण महेसिणं ॥ . य जुत्ताण, लहुजूप विहारिलं ॥रेणा

पाठातरे अपहोयणा, पाठातरे श्रपाहणा

(₹) दशवैका सिकतुं चोश्चं अभ्ययनः पंचासव परिन्नाया, तिग्रत्ता वसु संजया पंच निग्गहणा धीरा, निग्गंथा उड्जुदंसिणो ॥११॥ आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु खवाजना ॥ वासास पिनसंखीणा, संजया सुसमाहिया મરથા परीसह रिज दंता, ब्रुयमोहा जिइदिया ॥ सब जुक पहीणठा पक्षमंति महेसिणो 118311 द्वकराइयं करित्ताण, हुस्सहाइ सहितु य ॥ के इन देवलोस, केइ सिद्यंति नीरया 118811 खितता पुत्र कम्माई, संजमेण तवेण य ॥ सिद्धिमग्ग-मणुपत्ता, ताइली। परिनिब्बुमे ति वेमिर्ध इतिखुमगतिश्रायारकहा नाम तइय श्रद्ययणं सम्मत्तं.

सुयं मे श्रान्स तेणं नगवया एव-मकायं ॥ इह खद्ध रुद्धीवणिया नामऽद्ययण, समणेणं चगवया महावीरेणं, कासवेणं पवेइया, सु श्ररकाया, सु पत्रचा,

सेयं मे श्रहिक्तिउं, श्रद्ययणं धम्म पन्नति ॥ १ ॥ 🎾 कयरा खद्ध सा ठज्जीविषया नामध्ययणं, समलेणं

जगवया महावीरेणं, कालवेणं पवेइया, स

तृटक अध्ययनो, सु पन्नता, सेयं मे छाहि ज्ञिङ खद्ययण धम्म पन्नति ।२। इमा खब्र सा ठङ्कीविषया नामऽषयण, समर्राणं

जगवया महावीरेखं, कासवेखं पवेश्या, सु श्रस्काया, सु पत्रचा, सेयं मे छहि ज्ञिनं खवयणं धम्म पत्रति॥

(ધ)

त जहा-पुढविकाइया रे, व्यालकाइया २, तेलकाइया ३, वाडकाइया ४, वणस्तइकाइया ५, तस्तकाइया ६॥ पुढिव चित्तमंत-मरकाया, अणेग जीवा, पुढो सत्ता, थ्रवत्र सत्त परिवाएवा ॥ १ ॥ श्राज्ञितमत-मकाया, श्रणेग जीवा पुढो सत्ता, श्रमञ्च सञ्च परिषाएण ॥ २ ॥

तेउ चित्तमत-मस्काया, श्रापेग जीवा, पढ़ो सत्ता क्षत्रज्ञ सञ्च परिष्युष्य ॥ ३ ॥

वाज चित्रमत-मस्काया, श्रणेग जीवा पुढो सत्ता,

क्षत्रज्ञ सञ्च परिलय्ख ॥ ४॥ वणस्सई चित्तमत-मरकाया अणेग जीवा, पुढो सत्ता,

श्रवत सत परिषएणं, तं जहा-श्रगावीया, मृतवीया, ग्रोरचीया, राधवीया, वीयरुहा समुद्यिमा, तण, ल या ॥ वणस्सङकाइया, स वीया, चित्तमंत मकाया,

दश्वेका सिकनुं चोधुं अध्ययन **(3**), श्रुषेग जीवा, पुढो सत्ता,श्रमत्त सत्त परिषएण ॥**५**॥, से जे पण इमे अणेगे, बहवे तसा पाणा ॥ तंजहा-श्रंक्या, पोयया, जराजया, रसया, संसेइमा समुचि मा, उम्रिया, उववाइया, जेसिं केसिं च पाणाणं, स्र निकंत, पिकंत, संकुचियं, पसारियं, रुयं, जत, त स्तियं, पलाइयं, श्रागाई गई, विनाया, ने य कीम प यंगा जा य कुंयुं पिष्पी क्षिया, सबे वेइ हिया, सबे तेई दिया, सबे चर्डारें दिया, सबे पचिदिया, सबे तिरिस्क जोिखया, सबे नेरझ्या, सबे मण्या, सबे देवा, सबे पाणा परमाइ निमया ॥ एसी खब्ब उन्नी जीवनिकार्च,

तस्सकार्ग ति पबचई ॥ ६ ॥ इचेसिं ठएहं जीवनिकायाण, नेव सयं दंमं समार नेजा, नेवऽत्रेहि दमं समारंत्रावेजा, दमं समारंत्रते ऽवि स्रन्ने न समणुजाषेद्धाः, जावद्धीवाए, तिविद्य

तिविद्देण, मणेणं,वायाए, काएण, न करेमि, न कार

वैमि, करंतंऽपि श्रन्नं न समणुजाणामि, तस्स जते, पिकसामि, निंदामि गरिहामि, श्रप्पाएं वोलिरामि॥ पढमे जंते महबए, पाणाइवायार्ड वेरमणं, सर्व जं ते पाणाइवायं पचकािम से सुहुमं वा, वापरं वा,

तृटक अध्ययनो, ₹(ξ)

तंजदा-पुढविकाइया १, श्रानकाइया २, तेनकाइया ३, वानकाश्या ४, वणस्तइकाश्या ५, तस्तकाश्या ६॥ पुढिव चित्तमत-मरकाया, अखेग जीवा, पुढो सचा, श्रम्भ सम् परिषाएएं।। १॥ श्रानिचनमंत-मस्काया, श्राणेग जीवा पुढो सत्ता, श्रमञ्ज्ञ सञ्च परिषाएषा ॥ २ ॥

सु पत्रता, सेयं में छहि जिंछ छद्यण धम्म पत्रति ।१। इमा खब्र सा ठडाविणया नामऽचयण, समणेणं नगवया महावीरेण, कासवेणं पवेश्या, सु श्रकायाः सु पत्रचा, सेंयं मे छहि जिन् खवयणं धम्म पत्रति॥

तेज चित्तमत-मस्काया, अशोग जीवा, पुढो सत्ता अन्न सम् परिणएणं ॥ ३ ॥

वाछ चित्तमत-मरकाया, श्रलेग जीवा पुढो सत्ता,

श्चनत्र सत्र परिवादक ॥ ४॥

वणस्सई चिचमत-मरकाया व्यणेग जीवा, पुढो सत्ता, श्रमञ् सत्र परिणएणं, तं जहा-श्रागवीया, मृखवीया,

प्रोरवीया, राधवीया, बीयरुद्दा समुद्यिमा, तण, ल या ॥ वणस्सङ्काङ्या, स बीया, चित्रमंत मरकाया,

श्रुषेग जीवा, पुढो सत्ता,श्रनत्त सत्त परिणएएं ॥५॥

से जे पुण इमे अणेगे, बहुवे तसा पाणा ॥ तंजहा-

श्रंमया, पोयया, जराजया, रसया, संसेइमा समुज्ञि मा, उम्रिया, उददाश्या, जेसिं केसिं च पाणाणं, अ

निकंत, पिकंत, संक्चियं, पसारियं, रुयं, नतं, त

स्सियं, पढ़ाइयं, श्रागाई गइ, विनाया, जे य कीम प

यंगा जा य कुंग्रुं पिष्पीलिया, सबे वेइदिया, सबे तेई

दिया, सबे चलरिंदिया, सबे पंचिंदिया, सबे तिरिक

जोशिया, सबे नेरझ्या, सबे मणुया, सबे देवा, सबे पाणा परमाहिमया॥ एसो खब्द वही जीवनिकार्य,

तस्सकार्ग ति पत्रचई ॥ ६ ॥

इचेसि ठएहं जीवनिकायाणं, नेव सय दंदं समार

नेजा, नेवऽत्रेहि दंमं समारनावेजा, दमं समारंजते

ऽवि यन्ने न समणुजारोज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं

तिविद्देश, मरोष, वायाए, काएए, न करेमि, न कार

वेमि, करंतंऽपि श्रन्नं न समणुजाणामि, तस्स जते,

पिकक्षमामि. निंदामि गरिहामि, श्रप्याणं वोतिरामि॥ पढमे जंते महत्वए, पाणाइवायार्ड वेरमणं, सब जं ते.पाणाइवायं पचकामि से सहमं वा, वापरं वा,

(७) वृटक अध्ययनो तस्सं वा, यावरं वा, नेवं सय, पाणे अड्वाएऊा(, ने वरत्रेहिं, पाणे अड्वायावेऊा,, पाणे अड्वायंतेऽवि अन्ने न समुजाणेऊा, जावडीवाए, तिविद् ्तिवि हेर्ण, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि,

करतंऽिप छात्रं न समग्रुजाणामि, तस्स जंते, पिं कमामि, निंदामि, गरिहामि छप्पाण बोसिरामि॥ पढमे जते महबप, छविष्ठिमि, सवासपाणाद्वायास वेरमणं॥ १॥

वरमणे ॥ १ ॥
श्रद्धावरे छुचे जंते मह्वए, मुसावायान वेरमणं, स
वं जंते मुसावाय पचल्कामि । से कोहा वा, लोहा वा,
ज्ञया वा, हासा वा, नेव तय मुसं वाएड्डा, नेवऽत्रिहें
मुसं वायावेड्डा, मुस वायतेऽवि श्रते न समणुजाणेड्डा।
जावजीवाए, तिविहं तिविहेणं, मणेण, वायाए, का
एणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतंऽिष श्रत न समणु
जाणामि, तस्स जंते, पिक्हमामि, निंदामि, गरिहामि,
श्रद्धाणा वोतिरामि॥ शुचे जंते महवए, ज्वितिमि,

अप्पाषा वोतिरामि ॥ जुझे जंते महवप्, छविछी सबार्च मुताबायाज्ञ वेरमणं ॥२ ॥ अहार्वरे तञ्च जते महवप्, छविनादाणाञ्च जंते खदिनादाणं पशक्कामि से, गामे वा चित्तमंतं वा, श्रचित्तमंतं वा, नेव सयं श्रादन्नं गिएहें ज्ञा, नेवऽन्नेहिं श्रादन्नं गिएहावेज्ञा, श्रादिन्नं गिएहंतेऽवि श्रन्ने न समणुजाणेज्ञा, जावज्ञीवाए, तिविहं तिवि हेणुं मणेणं, वायाए, काएण, न करेमि; न कारवेमि;

करंतंऽिष स्त्रज्ञ न समणुजाणामि, तस्स जंते पिकक मामि, निंदामि, गरिहामि, खप्पाणं वोसिरामि तचे जंते महबए, खबिठचंमि, सबार्च स्रदिज्ञादाणार्चं वेरमण ॥ ३ ॥

वेरमण ॥ ३ ॥ श्रहावरे चन्ने जते महत्वए, मेहुणान वेरमणं; सबं जते मेहुण पद्यस्कामि, से दिवं वा, माणुस्तं वा;

सबं जंते मेहुण पद्मकामि, से दिवं वा, माणुस्तं वा; तिरिक्तजोणियं वा, नेव सय मेहुणंसेवेजा, नेवऽने हि मेहुणं सेवावेजा, मेहुणं सेवंतेऽवि स्त्रने न समणु

जांषेज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं, मणेणं, वा याए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि करतऽपि छन्नं न समणुजाणामि, तस्स संते, पिकक्मामि, निंदामि,

गरिहामि, श्रव्पाण वोसिरामि॥ चउने जंते महबए, जविज्ञिमि, सबार्ग मेहुणार्ज वेरमण् ॥४॥

व्यक्तिम, संबंधि महुणाज वरमण ॥ ४॥ श्रहावरे पंचमे जंते महबए, परिगहार्ज वेरमणं;

तृहक श्रध्ययनो (₹¤) सबं जते परिग्गह पचएकामि, से खप्पं वा, बहुं वा,

श्रणं वा, श्रुल वा, चित्तमत वा, श्रचित्तमंतं वा; नेव

ज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेण, मणेणं वायाए, काएण, न करेमि, न कारवेमि, करतःपि श्रन्न न स

सय परिगाई परिगिएहेजा नेवडबेहि परिगाइ परि गिण्हावेजा, परिग्गह परिगिएहतेऽवि स्रज्ञे न समणु जापेजा. जावक्कीवाए. तिविहं तिविहेणं. मणेणं वायाए, काएण, न करेमि, न कारवेमि, करंतऽपि अलं न समणुजाणामि, तस्स जते, पिकक्रमामि, निंदामि गरिहामि श्रप्पाणं वोसिरामि ॥ पंचमे जंते महबप्र जविज्ञंमि, सवाजं परिगाहाजं वेरमण॥ **८**॥ श्रहावरे ठिठे जते वष, राईजोयणार्च वेरमणं, सब ज़ंते राईनोयण पद्मकामि, से ब्रसण वा. पाणं वा. खाइमं वा, साइम वा, नेन सयं राई जुजेजा, नेवऽन्ने हिं राई जुजावेला, राई जुंजतेऽवि खन्ने न समणुजाणे

रिहामि. ष्ट्रप्पाण बोसिरामि ॥ ठठे पते वए, जब िन मि, सबान राईनोयणाजं वेरमणं ॥ ६॥ इचेइयाइ पंच महबाइ! राईजोयण वेरमण ठ

मणुजाणामि, तस्स नते, पिकस्मामि, निंदामि, ग

दशवेकालिकनुं चोथुं अध्ययन (११)
गाई, अन ह्यग्याण, ज्वसपिक्ताणं विहरामि ॥
से निरकूवा, निरकूणी वा, संजयः विरय, पिनह्य
पचस्ताय पावकम्मे, दिया वा, राजं वा, एगर्ज वा, प रिसागर्जं वा, खुते, वा, जागरमाधे वा, से पुढि वा, निर्तिं वाः सिलं वाः लेलु वा, ससररकं वा काय, स सररक वा वर्डं हृजेण वा, पाएण वा, कठेण वाः कि लिचेण वा, अंग्रुलियाण् वा, सिलागाण् वाः सिलाग हृजेण वाः नालिहेक्ताः न विलिहेक्ताः न घटेकाः न

जिदेकाः श्रमं नाविहावेकाः, न विविहावेकाः, न घष्टावेकाः; न जिदावेकाः, श्रम श्राविह्तं वाः, विवि हंत वाः, घष्टंतं वाः, जिदत वाः,न समणुजाणेकाः, जाव क्रीवाए, तिविहं तिविहेणं, मणेण, वायापः, काएणः न करोमिः, न कारवेमिः, करंतऽपि श्रमं न समणुजा णामिः तस्स जंते, पश्चिक्षमामिः निदामिः, गरिदामिः

श्चप्पाणं वोसिरामि ॥ र ॥

पञ्चस्काय पावेकम्मे, दिया वा, रार्च वा, पगर्च वा, प रिसागर्चवा, सुत्ते वा, जागरमाखे वा, से झदगं वा, जुसं वा, हिमं वा, महिय वा, करग वा, हरतखुगं वा, सुद्धो

से जिस्क वा, जिस्तुणी वा, सजय, विरय, पनिहय

(१२) वृदक अध्ययनोः दर्ग वा, खदनक्षं वा कायं, नदनक्षं वा वर्न, संसंधिर्द्ध

ज्ञा. न खायावेजा, न पर्यावेजा, श्रत्र नामुसावेजा, न संफुसावेजा, न श्रावीखावेजा, न पवीखावेजा, न श्रकोमावेजा, न पकोमावेजा, न श्रायावेजा, न प यावेजा, अञ्च आमुसंत वा, संफुसंतं वा, आवीखतं वाः पवीलतं वाः, श्रक्तोरंतं वाः पक्तोरंतं वाः, श्रायावं तं वा, परावतं वा, न समणुजाणेङ्का, जावङ्कीवाए, तिविद्दं तिविद्देण, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमिंग न कारवेमि, करवंऽपि श्रव न समणुजाणामि, तस्स न्नेते, पिकस्मामि, निदामि, गरिहामि, श्रप्पाणं वो

से जिख्ख वा, जिख्खुणी वा, सजय, विरय,पडिइय पद्मकाय पावकम्मे, दिया वा रार्ज्य एगर्जवा परि सागर्य वा, सुत्ते वा, जागरमाणी वा, से श्रगणि वा, इगालं वा, मुन्मुरं वा, श्रवि वा, जालं वा, श्रक्षायं वा, सुद्धागिष वा, उक्त वा, न उजिज्ञा, न घटेड्या, न निवेजा, न बजाखेजाः पजाखेज्जाः न निवावेज्जाः,

वा कार्य, सलिए वा वर्ड, नामुसेजा, न सफुलेजा,

सिरामि ॥ १ ॥

नाविखेजा, न पवीखेजा, न अस्तोमेजा, न परकोमे

दश्वेकाक्षिकतुं चोधुं अध्ययनः श्चन्नं न उज्जावेजा, न भट्टावेजा, न शिंदावेजा, न **ग्रजाकावेजा, न प्रजाकावेजा, न निद्यावावेजा,** श्यनं उन्नंतं वा, घहतं वा, जिंदंतं वा, उन्नाखंतं वा, पज्ञाखंत वा, निद्यावतं वा, न समणुजारोज्ञा, जा वज्ञीवाए, तिविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतंऽपि श्रन्न न समणुजा णामि, तस्त जते, पिकक्षमामि, निदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोतिरामि ॥ ३ ॥ से जिस्खू वा, जिस्स्तूषी वा, सजय, विरय, पिन हय पचरकाय पावकम्मे, दिया वा, रार्च वा, एगर्च वा, परिसागर्र वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से सि एण वा, विहू एण वा, ताखियटेण वा, पत्तेण वा, पत्त जंगेण वा, सोहाए वा, साहाजगेण वा, पिहूएण वा,

नंगेण वा, सोहाए वा, साहाजगेण वा, पिहूप्ण वा, विद्वाप होण वा, चेलेण वा, चेलेण वा, होण वा, होण वा, मुहेण वा, छप्पणो वा कायं, वाहिर वा वि पुग्ग लंग न फुमोज़ा, न वीपजा, श्रवं न फुमोज़ा, न वीपविद्धा, श्रवं फुमंतं वा। वीयत वा न समणुजा पेज्जा, जावज्जीवाए, तिविद्द तिविद्देणंमणेंथं, वायाप, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतंऽपि श्रवं न

(१४) वृटक अध्ययनो 🐬 समणुजाणामिः तस्त जते पिकक्षमामि निंदामिः गरिहामि अप्पाण वोलिरामि ॥ ४ ॥ से जिल्लु वा, जिरलुणी वा, सजय, विरय, पीर ह्य पद्यक्ताय पावकम्मे, दिया वा, रार्च वा, एगर्च वा,

परिसागर्र वा, सुने वा, जागरमाणे वा, से वीएस वा बीय पइन्नेसु वा, रूढेसु वा, रूढ पइन्नेसुवा, जाएसुं वा, जाय पइंडेसु वा, इरिएसु वा, इरिय पइंडेसु वा, विन्नेस् वा, विन्न पइहेतु वा, सचित्तेसु वा सचित्त कोल पिकनिसीएस वा गहेउजा, न चिंहरेजा, न नि

सीएउजा, न तुयहेउजा, श्रनं न महावेउजा, न चिहावे ज्जा. न निसीयावेज्जा,न तुयहावेज्जा,श्रत्न गद्यतं वा ।चन्नतं वा, निस।यत वा, तुयहत वा, न समणुजाणे उजा, जावरजीवाप, तिबिह तिबिहेणं, मणेण, वाया ए, कापणं, न करेमि, न कारवेमि करतऽपि अर्ज न

सम्मुजाणामि तस्त जते, पिक्यमामिः निंदामि गरिहामि, श्रव्याणं, वोसिरामि ॥ ५ ॥

से जिस्स् वा, जिरस्तूषी वा, सजय, विरय, पिन हय पचरकाय पावकम्मे, दिया वा, रार्च वा, एगर्च वा, परिसागर्र वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से कीम

दश्वैकालिकनुं चोथुं छ। ययन

वा, पयंगं वा, कुथुं वा, िष्पि लियं वा, इम्रेंसि वा, पायिस वा, वाहुिस वा, उम्रेंसि वा, उद्दंसि वा, सी संसि वा, वम्रेंसि वा, पिनग्गहंसि वा, क्वलसि वा, पायपुत्रणंसि वा, रयहरणंसि वा, गोग्रगंसि वा, उ

कुगिस वा, दंकगंसि वा, पीडगिस वा, फलगंसि वा, सेडजगंसि वा, संथारगंसि वा, छन्नयरंसि वा, तहप्प गारे जवगरण जायसि, तर्ज संजयामेव, पिनेलेहिय पिनेलेहिय, पमडिजय पमडिजय, एगंत-मवणेडजा

नोणं संघाप -मावज्जेज्जा ॥ ६ ॥ (अतुषुरुरुचम्) अजयं चरमाणो यः पाण जुयाइ हिसई ॥

बंभई पावय कम्मं, तं से होई करुय फर्बं ॥ १ ॥ अजयं चिन्नमाणो य, पाण जूयाई हिसई ॥ बंधई पावयं कम्मं, तं से होई करुय फर्बं ॥ १ ॥

श्रज्ञयं सयमाणो य, पाण ज्यार हिसई ॥ वंधर्र पावयं कम्मं, तं से होर ककुय हिसई ॥ श्रज्ञ्य स्यमाणो य, पाण ज्याई फुलं॥ ३॥

श्रज्ञच स्वमाणा यः पाण ज्याहं फुलं ॥ ३ ॥ वधई पावय कम्मः तं से होड ककुय फलं ॥ ४ ॥ श्रज्ञचं ज्जमाणो यः पाण जयाई हिस्तर्ड ॥ (१६) छूटक खध्ययनो बंधर्र पावय कम्मं, तं से होइ कसुयं फखं ॥ ४ ॥

श्रज्यं जासमाधो य, पाण जूपाई हिंसई ॥ वंधई पावयं कम्मं तं से होइ कशुवं फर्स ॥ ६ ॥ कहं चेर कहं चिछे कह्—मासे कहं सए ॥ कहं छुजंतो जासंतो पावकम्म न वधई ॥ ७ ॥ जयं चरे जयं चिछे जय--मासे अयं सए ॥

नत् जुगता नत्ता सन्तान्त्र स्व प्रमुख्य स्व ॥ जयं चरे सद् ॥ जयं चरे सद् ॥ जयं चुंजेतो जासतो पावकम्म न वंधई ॥ छ ॥ सब जूयऽप्यजूयस्स सम्म जूयाई पासर्व ॥

पिहिंयासवस्स दतस्स, पावकम्मं न वंधई ॥ ७ ॥ पढमं नाणं तर्रु दया, एव चिठ्ठः सह सजए ॥ अञ्चलाणी किं काही, किं वा नाहीय सेय पावगं॥१०॥

सोचा जाणह कहाणं, सोचा जाणह पावगं ॥ श्रजपंपि जाणह सोचाः जं सेयं त समायरे ॥११॥ जो जीवेबि न याणाईः श्रजीवेबि न याण्डे ॥ जीवाजीवे श्रयाणंतोः कहं सो नाही य संजमा।११॥

जीवाजीवे व्ययाणंतोः कहं तो नाही य संजमा। १२। जो जीवेवि वियाणाईः व्यजीवेवि वियाणई ॥ जीवाजीवे वियाणंतोः तो हु नाही य सजमा। १३॥ जया जीव – मजीवे यः दोवि एए वियाणुई॥ गई बहु। वहंं सब जीवाण जाणुई॥ १४॥

दशवैकालिकनुं चोधुं श्रध्ययन (88) जया गई बहुविहं, सब जीवाण काण्हे ॥ तया पन्ने च पार्व च, वंध मोरकं च जाणई ॥१५॥ जया पुत्रं च पात्रं च, वंध मोरकं च जाण्डि ॥ तया निविंदए जीए, जे दिवे जे य माणुले ॥ १६॥ जया निविद्य जोए, जे दिवे जे य माणुसे ॥ तया चयइ संजोगं, सम्रितरं च वाहिरं ॥ १९ ॥ जया चयइ संजोगं, संप्रिंतर च वाहिरं॥ तया मुंने जवित्ताणं, पद्मइए प्रणगारिय ॥ १८ ॥ जया मुंने जवित्राण, पद्मक् ख्रणगारियं ॥ तया संवर-मुक्कि, धम्मं फासे श्रापुत्तरं ॥ १ए ॥ जया संवरं-मुक्कर्ठ, यम्म फासे श्राणुत्तरं ॥ तया धुणई कम्म रय, अबोहि कल्लस करं ॥१०॥ जया धुणई कम्म रय, श्रवीहि कबुसं कर्म ॥ तया सबसग नाण, दंसणं चानिगर्रा ॥ ११॥ जया सबचगं नाणं, दंसणं चानिगंहई ॥ तया लोग-मलोगं च, जिलो जालइन्केनली ॥११॥ जया खोग-मलोगं च, जिणो जाणह केवली ॥ तया जोगे निरुचित्ता, सेवेसिं पिनवजाई ॥ १३ ॥

जया जोगे निरुंजिना, सेबोसे पनिवजाई ॥

(रव) वृटक श्रष्ययनो, तया कम्मं खवित्ताणं, सिर्क्ति गद्य नीरतं ॥ १४ ॥

तया खोग महयहो, सिद्धो ह्वश् सासर्ग ॥ १५ ॥ (ब्रार्शागीतेहत्त्वः) सहसायगस्स सम्बास्तःसायाज्वगस्स निगामसार

जया कम्मं खवित्तार्णं, सिर्द्धि गद्यद्र नीरर्जं॥

सुहसायगस्स समयास्त्र,सायाज्वगस्स निगामसान्स्स छत्रे,बाषा पहापस्त,ज्ञुञ्जहा सुगइ तारिसग्गस्स ॥१६॥ स्वो सुपापहापुस्स, उज्ज्ञमङ् खति सजमश्यरत्र॥

परीसहे जिएं तस्स,मुझ्हा सुगइ तारिसग्गस्स॥१९॥ पञ्चावि ते पयाया, खिप्पं गर्ग्नति स्थमर जनपाइ॥

जेसिं पियो तही स-जमो य खंती य इंजचेरं च ॥ १० ॥

् श्र_{वंडस्ट} ।५) इक्षेय २ड्जीवणिय, सम्मदिष्टि सया जए॥ छद्वरं खजित सामन्न, कम्मुणा न विराहिजासि त्ति

नेमि ॥ १ए ॥ ॥ इति ठजीविषया नाम चठठ श्रद्ययणं सम्मच ॥

म रात उजावाराया नाम चंडे अद्ययण सम्मत्त

नचराध्ययननुं पहेलुं अध्ययन (१५) छाय श्री उत्तराध्ययन सूत्रनुं पहेलुं, वीजुं,

त्रीज़ं छने चोयुं छध्ययन प्रारंनः (अनुष्टुब्ड्चम्) संजोगा विष्य मुकस्स, अधागारस्त निस्कुणो ॥

विण्यं पाछ करिस्सामि, छाणुपुर्वि सुरोह मे ॥ १ ॥ श्राणा निद्देस करे, गुरूल-मुक्वाय कारए ॥

इंगियागार संपन्ने, से विष्णिएति बुचई ॥ १ ॥ श्राणा ऽनिद्देस करे, ग्रुरूश−मणुववाय कारए ॥ पिनणीए असंबुद्धे, अविणोपत्ति वचई ॥ ३ ॥ जहा सुणी पूड् कन्नी, निकक्तिकार सबसो ॥ पर्वे इस्सील पिनणीए, मुहरी निकसिकार ॥ ध ॥ क्षा कंमगं चइत्ताणं, विष्ठं खंजह सूयरे ॥

पवं सीखं चइत्ताणं, इस्सीख रमई मिए ॥ ५ ॥ सुणिया न्नावं साणस्स, सूयरस्स नरस्स य ॥ विषाप रविक्त अप्पाणं, इष्टंतो हिय--मप्पणो ॥६॥ तम्हा विषय-मेसिजा, सीखं पिमलनेजार्र ॥ बुरुपुत्त नियागठी, न निकसिझाइ कन्ह्रई॥ ७॥

निस्तते सिया मुद्री, बुद्धाणं श्रुतिए सया ॥ श्रव जुनाणि सिर्फेजा, निरठाणि व वजाए ॥।।।। श्रणुसास्तिनं न कुप्पेज्ञा, खंति सेवेज्ञ पित्र ॥
खुडेहिं सह संतर्भा, हासं कीकं च वज्ञद् ॥ ए॥
माय चंनावियं कासी, घटुयं मा य श्राववे ॥
कालेण य श्रहिजित्ता, तम्र काक्ज एकमे ॥ १० ॥
श्राह्य चंनाविय कहु, न निन्ह्वेज क्याइवि ॥
कर्म किनित जासिज्ञा, श्रकम नो किनित्ति य ॥११॥
मा गवियस्सेव कसं, वयण मिष्ठे पुणो पुणो ॥
कसंव द्यु-माइशे, पावग परिवज्ञए ॥ ११ ॥
(काल्यम)

द्यपासवा यूबवर्यो क्वसीटाा, मिर्छपि चम पकरेति सीसा ॥ चित्तापुष्टा बहु दस्कीववेखा, पसायप ते हु द्धरासयपि ॥ १३ ॥ (अनुपृरद्वस)

ना पुठो वागरे किंचि, पुठो वा नाखियं वए ॥ कोह श्रसर्च कुवेजा, भारेजा पिय-मिप्यं ॥१४॥ श्रप्पाचेव दमेयबो, श्रप्पा हु सब्बु छुदमो ॥

अप्पा दतो सुद्दी होइ, अस्ति लोए परत य ॥१५॥ वरं मे अप्पा दतो, संजमेण तवेल य ॥

उत्तराध्ययननं पहेलं श्रध्ययन (88) माहं परेहिं दन्मंतो, वंधणेहिं वहेहि य પારઘા पिन्णीयं च बुद्धाणं, वाया श्रद्धव कम्मुणा ॥ याबी वा जइ वा रहस्से, नेव कुद्धा क्याइवि ॥१९॥ न परकर्न न पुरहा, नेव किचाण पिछर्न ॥ न जुंजे करणा कर, सवणे नो पिनस्प्रणे ligoit नेव पट्टिशियं कुद्धा, परकार्षिन च संजए॥ पाए पसारिए वावि, न चिठ्ठे ग्रहणंतिए ાકુષા थायरिएडि वाहित्तो, तुसिणी न कयाइवि॥ पसायपेहि नियागेही, जबचिहे गुरुं सवा HOSH श्राखवंते खवते वा, न निसिक्त क्याइवि॥

चड्डिण श्रासण धीरो, जर्च जुत्त पित्स्सुणे ॥११॥ श्रासणगर्च न पुछेद्धा, नेव सेद्धागर्च कयाइवि ॥ श्राममुक्कुर्च सतो, पुछेद्धा पजवीनको ॥११॥ एवं विषय जुत्तस्स, सुत्तं श्रष्ठ स तङ्गन्यं ॥ प्रमाणस्स सीसस्स, वागरेद्धा जहा सुयं ॥१३॥

मुसं परिहरे जिल्लू, न य श्रोहारिशि वए ॥ जासा दोसं परिहरे, माय च वज्जए सया ॥२४॥ न खवेज्ज पुठो सावजं, न निरुठ न मम्मयं॥ अप्पणठा परठा वा, उजयस्सतरेण वा है ।॥१५॥॥

_	
(११) वृटक श्रध्ययनो	
समरेष्ठ श्रगारेष्ठ, सधीष्ठ श्र महापड़े ॥	
एगो एगिडिए सद्धि, नेव चिठे न संखवे	ાાશ્કા
जं मे बुद्धाणुसासति, सीपण फरुसेण वा ॥	
ममलाजोति पेहाए, पयुन्तं पिनस्युषे	॥दभा
अणुसासण-मोवाय, इक्रमस्स य चोयुर्ण ॥	•
हियं तं मन्नई पन्नो, वेसं होइ व्यसाहुणी	॥इठ॥
हियं विगय ज्ञया बुद्धा, फरुसपि अणुसासणं	u
वेस तं होइ मृढाण, खति सोहिकरं पय	ાશિષ્ટા
छासणे उवचिठेजा, छणुचे छकुए थिरे ॥	
श्रप्पुठाई, निरुठाई, निसीएजऽप्कुक्कुए् ्	113011
काजेण निरक्तमे जिख्खू, काजेण य पनिक्रमे	u
श्रकालं च विवज्ञित्ता, काले काल समायरे	115511
परिवामिए न चिट्ठेला, जिएसू दत्तेसणं चरे	n
प।डरूवेण एसित्ता, मिय कार्लेण जरकए	ારૂશા
नाःद्र-मणासन्ने, नन्नेसिं चरखु फासन् ॥	
पगो चिठेका जनठा, खिचा त नश्कमे	113311
नाइ उचेव मीए वा, नासन्ने नाइ दूरर्छ ॥	
फामुयं परकक थिकं, पिकगाहिङ्का सजय	ແຊຍແ
अप्पपाणप्पचीयमि, पिनजनि संवुने ॥	

उत्तराध्ययननुं पहे खुं श्रध्ययनः	(৪৪)
समयं संजप चुंजे, जयं श्रप्परिसानियं	ારૂપા
सुक्रमेत्रि सुपक्केति, सुन्नित्रे सुहने मने ॥	\$
सुनिहिए सुबहेति, सावजं वद्धाए सुणी	ારફા
रमए पिनए सासं, इयं जहंव वाहए।।	•
वासं समइ सासंतो, गिवयस्तंव वाहर	118811
खुमुया मे चवेमा मे, खकोसा य वहाय मे	11
कल्लाण्∸मणुसासंतो, पावदिकिति मन्नइ	॥३७॥
पुत्तो मे जाय नाइत्ति, साहु कल्लाण मन्नई	11
पावदिष्ठिত श्रप्पाणं, सासं दासित मन्नई	ાારૂભા
कोवए खायरिय, खप्पाणं न कोवए॥	
बुद्धेविघाइ न सिया, न सिया तोत्तगवेसए	llasil
श्रायरियं कुवियं नद्या, पत्तिएण पसायए॥	
विद्यवेद्धा पंज लिखको, वएका न पुणोचि	य ॥४१॥
धम्मज्ञियं च ववहारं, बुद्धे हायरिय सवा	ll
त-मायरंतो ववदारं, गरह नाजिगन्नई	1135(1
मणोगयं वक्कगयं, जाणित्रायरियस्सर ॥	
तं परिगिद्य वायाए, कम्मुणा जववायए	
वित्तो अचोइए निञ्च, खिप्पं इवइ सुचोइ	T II
जहोवइहं सुकयं, किचाइ कुवइ सया	าเยยป

(११) तृटक अध्ययनो	
समरेसु अगारेसु, सधीसु अ महापद्दे ॥	- 1
एगो एगिडिए सिंड, नेव चिठे न संबवे	ાશ્ક્રા
जं मे बुद्धाणुसासति, सीएण फरुसेण वा ॥	-
ममलानोत्ति वेहाए, प्यूटनं पिनस्सुले	ાારકાા
अणुसासण-मोवाय, जुक्रमस्स य चोय्णं ॥	
हियं तं मन्नई पन्नो, वेसं होह व्यसाहुणो	॥४०॥
हिंयं विगय ज्ञया बुद्धा, फरुसंपि श्रणुसासणं	11
वैस तं होइ मूढाण, खित सोहिकरं प्यं	ાશિલા
स्रासणे व्वचिद्वेजा, स्रणुचे सकुए थिरे ॥	
अप्पुठाई, निरुठाई, निसीएजाऽप्कुक्कुए	11 <u>\$</u> 011
कार्जेण निस्कर्ने निस्स्तृ, कालेण य परिक्रमे	าแ
ब्रकालं च विविज्ञता, काले काल समायरे	गइरा
परिवामिए न चिन्नेजा, जिरखू दत्तेसण चरे	Ħ
पाडरूवेण एसिसा, मिय कालेण अस्कर	ાર્થા
नाः्ट्र−मणासत्रे, नत्रेसि घरख फास∄ ॥	
एगो चिठेडा जनहा, खिषचा त नइक्षमे	ແຊຊແ
नाइ उद्येव नीए वा, नासन्ने नाइ दूरई ॥	
फामुयं परकम थिम, पनिगाहिङ्ज सजए	แรยแ
श्चप्पपाणप्यवीयमि, पिन्हन्निमे संबुने ॥	

जत्तराध्ययनम् पहेलुं श्रध्ययनः (१३) समयं संजप चुंजे, जयं श्रप्परिसानियं ારૂપા सकरेति सपकेति, सन्नित्र सहने मने ॥ सुनिहिए सुलहेति, सावजं वद्धाए मुणी ારફા रमए पंक्तिए सासं, इयं जहव वाहए।। बालं समइ सासंतो, गलियस्तंव वाहए 115211 खरुया में चवेशा में, अकोसा य वहाय में ॥ क्ख्नाण्∸मणुसासतो, पावदि हित्ति मन्नइ ॥३७॥ प्रतो मे जाय नाइति, साहु कल्लाण मनई ॥ पावदिहिछ श्रव्पाण, सासं दासति मञ्जर्ड ાાગ્રહ્યા कोवए आयरिय, अप्पाणं न कोवए॥ बुद्धीवघाइ न सिया, न सिया तोचगवेसए llaBill ञ्चायरियं कुवियं नद्या, पत्तिएण पसायए ॥ विद्यवेडा पंज लिलमो, वएडा न पुणोत्ति य แชงก धम्मिज्ञयं च ववहारं, बुद्धे हायरियं स्वा। त-मायरंतो ववहारं, गरहं नाजिगहर्ड 118211 मणोगयं वक्षगयं, जाणित्तायरियस्सन ॥ तं परिगिद्य वायाए, कम्मुणा जववायए वित्तो अचोइए निचं, खिप्पं हवह सुचोइए॥ जहोबइह सुक्यं, किञ्चाई कुबंद सया

(ধধ) क्रुटक ऋध्ययनो 🐃 🧞 नचा नमइ मेहावी, सोए किती से जायए 🛚

हवइ किञ्चाण सरखं, जूयाखं जगई जहा ॥४५॥ पुद्धा जस्स पसीयंतो, सञ्जूदा पुत्रसंथुया ॥ पसना खाजइस्सति, विवसं श्रहियं सुयं

113811

(काव्यम्) स पुज्ञसंद्वे सुविष्यिय संसए,

मणोरुइ चिठ्ठइ कम्मसपया ॥ तवो सामायारिं समाहि सबुमे, महज्जुई पचवयाइ पालिया ॥४७॥

सदेव गंधव मणुस्स पूड्ए, चइत् देहं मखपंक पुष्टय ॥

सिद्धे वा हवई सासए देवेवा. अपरए महिहिए ति वेमि ॥ ४७॥

॥ इति विणयनामं पढमद्ययण सम्मत्तं ॥

सुय में आउसं तेणं नगवया एव मास्काय, इह

खब्ब वावीसं परीसहा सम्पोण जगवया महावीरेणं कासवेएं पवेश्या, जे जिल्ल्यू सोज्ञा नद्या जिल्ला छा निज्य जिस्कायरियाए परिवयतो प्रहो नो हिवंनिजा। उत्तराध्ययनतुं दीजुं श्रध्ययनः (१५) क्वरे खुलु ते चावीसं परीसहा समषेणं नगवया म

हावीरेणं कासवेणं पवेष्ट्या १, जे जिल्ल् सोचा नचा जिचा श्राजिज्य जिल्लायरियाए परिवयंतो पुद्धो नो विहंनिज्ञा, इमे ल्ल्लु ते वादीसं परीसहा समणेणं जनवया महावीरेण कासवेणं पवेष्ट्या, जे जिल्ल्लु सो चा नचा जिल्ला श्राजिज्य जिल्लायरियाए परिवयंतो

जगनया महावीरेण कासवेण पवेड्या, जे जिरुखू सो चा नचा जिचा व्यक्तिजूय जिरुकायरियाए परिवर्षतो पुठो नो विद्ंनिज्ञा ॥ तंजहा— दिगिंठा परीमहे १, पिवासा परीसहे ४, सीय परी सहे ३, उसिण परीसहे ४, दंसमसग परीसहे ४, खवे

राह इ. डासे प्रसिद्ध ठ, दसमसा प्रसिद्ध दे, अच त्व परीसहे ६, अग्द परीसहे उ, इडी परीसहे ठ, च रिया परीसहे ए, निसीहिया परीसहे १०, सिज्जा परीसहे ११, अक्कोस परीसहे १४, वह परीसहे १३, जायणा परीसहे १४, अत्वोच परीसहे १८, रोग परीसहे १६, तणफास परीसहे १७, जब्ख परीसहे ४०, सक्कार प्रकार परीसहे १७, पन्ना परीसहे २०,

जायणा परासह रक्ष, अक्षाज परासह रय, राग परीसहे १६, तणफास परीसहे र७, जब्ख परीसहे र७, सक्कार पुरकार परीसहे र७, पन्ना परीसहे र०, अन्नाण परीसहे १८, दसण परीसहे १४ ॥ परीसहाण पविज्ञत्ती, कासंगेणं पवेड्या ॥ विगिंगा परिगप देहे, तवस्सी जिल्लु यामवं ।

(₹) तृटक अध्ययनोः न विंदे न विदावए, न पए न प्यावए 🐩 11 2 11 काखीपवग सकासे, किसे धमणि संतए ॥ मायन्ने असण पालस्स, अदीण मण सो चरे 11311 तम् प्रहो विवासाय, ख्रगत्रो लक्क सजय ॥ सीउंदग त सेवेजा, वियमस्सेसणं चरे n 8 n वित्रावाएस पंथेसु, श्रांखरे सुपिवासिए ॥ परिसुक मुहादीण, तं तितिरुखे परीसहं 1141 चरंतं विरवं झुई सीयं फुसइ एगया ॥ नाइवेलं मुणी गहे, सोबाणं जिणसासणं 11 是 11 न में निवारण श्रद्धि, ठवित्ताण न विद्धाए ॥ खहं तु ख्रागि सेवामि इ इ निरुख् न चिंतए ॥५॥ उसिए परियावेशं, परिदाहेण तिज्ञेए ॥ विंसु वा परियावेण, साय नो परिदेवए जन्हाहि तनो मेहाबी, सीयाण नोवि पछए॥ गायं नो परिसिंचिज्जा, न विएजा य खप्पयं ॥ ए ॥ प्रहो य दंस मसर्पाइ, समरेव महामुखी ॥ नागो संगामसीसे वा, सुरो छानिहणे परं 11 20 II न संतसे न वारिजा, मर्पेषि न पर्रसिए ॥

जवेहे न हुणे पाणे, जंजुंते मंस सोलियं

11 44 11

उत्तराध्ययननुं वीजु श्रध्ययन (83) परिजुन्नोई वज्ञेहिं, होखामित्ति अचेखए॥ प्रदुवा सचेखए होख्खं, इ इ जिख्खु न चितए॥१**२**॥ एगया अचेखए होइ, सचेखआवि एगया ॥ एयं धम्मं हिय नचा, नाणी नो परिदेवए ॥ १३ ॥ गामाणुगामं रोयंतं, ऋणगारं ऋर्किचणं ॥ ध्यरई ब्राणुपवेसे, तं तितिरुखे परीसहं ા ૧૪ લ अरइं पिठेल किचा, विरए आयरिएलए ॥ धम्मारामे निरारंजे, जवलंते मणी चरे ॥ १५॥ संगो एस मणुस्साणं, जाउ लोगमि इञ्चित ॥ जस्स एया परिज्ञाया, सुक्कंन त्तरस सामत्रं ॥ १६॥ प्व-मादाय महावी, पंकज्रुयार्ख इत्यिर्छ ॥ नो ताहि विइन्नेजा, चरेजात गवेसए ॥ १९ ॥ एग एव चरे लाहे, छाजिजूय परीसहे ॥ गामे वा नगरे वावि, निगमे वा रायहा शिए ॥ १८ ॥ असमाणो चरे जिल्लू नेव कुद्धा परिगाइ॥ श्रसंसत्तो गिइथ्योहि, छाणिकेन परिवर ।। १ए ॥ सुसाले सुन्नगारे वा, रुख्खमृते च एगउ ॥ अकुक्कुर्छ निसीएङ्का, न य वित्तासए परं ॥ २० ॥ तथ्य से अध्यमाणस्त, उवसम्मातिधारए ।

(१६)	तृटक अध्ययनो "	
	विए, न पए न पयावए	11 ર 11
	ासे, किसे धमणि संतष्॥	. ,
	पाणस्त, खदीण मण सो र	
तम् पुट्टो पिवासाए, ड्रगठो खङ्म संजए ॥		
	ज्ञा, वियमस्सेसर्णं चरे	11 8 11
वित्रावाएसु पंथे	सु, श्रानरे सुविवासिए ॥	
परिसुक मुहादी	णि, तं तितिरुखे परीसहं	ાયા
चरतं विखं खुई	ह्सीय फ़सइ एगया॥	
नाड्वेख् मुणी ग	हि, सोचाण जिषसासणं	11 द 11
न में निवारणं श्राप्टि, उवित्ताण न विज्ञाए ॥		
অহুঁ तु অ্ণি सेवामि इ इ जिल्लू न चिंतए ॥॥		
	रेणं, परिदाहेण तुज्जिए॥	
		แ ซ แ
जन्हाहि तनो मेहाबी, सीयाण नोवि पछए॥		
गायं नो परिसं	चिङ्का, न विएजा य श्रयः	यं ॥ ए ॥
पुष्टा य देस मर	प्राहे, तम्रेव महामुखी ॥	
	ति वा, सुरो श्रजिहणे परं	11 \$ 0 11
न सतस न वा	रिजा, मर्णेषि न पर्वतए॥	
ख़बह न हुण प	गाणे, जुंजुंते मंस सोशियं	n 33 ñ

चत्राभ्ययननुं वीजु अध्ययनः (१९) परिजुत्नोहें वहेहिं, होखामिति अचेखए ॥ अञ्जा सचेखए होस्त्वं, इ इ जिल्लू न चितए॥१२॥ एगया अचेखए होइ, सचेखआवि एगया ॥ एय धनमं हियं नचा, नाणी नो परिदेवए ॥ १३ ॥ गामाणुगामं रोधंतं, अणुगारं अर्किचणं ॥ अर्र्ष्ठ अणुपवेसे, तं तितिब्ले परीसहं ॥ १४ ॥ अर्द्ष्ठ पिठल किचा, विरए आयरित्लए ॥ धम्मारामे निरारंने, जवसंते मुणी चरे ॥ १५ ॥ संगो एस मणुस्ताणं, जान लोगमि इन्निल ॥

पव~मादाय मेहावी, पकजूयार्च इत्थितं ॥ नो ताहि विहत्नेज्ञा, चरेज्जत्त गवेसर् ॥ १७ ॥ एग एव चरे खाढे, श्रज्जिजूय परीसहे ॥ गामे वा नगरे वावि, निगमे वा रायहाणिए॥ १८ ॥

जस्स एया परिक्राया, सुक्कंन चरस सामत्रं ॥ १६ ॥

श्रसमाणो चरे जिल्लु नेव कुद्धा परिगाइं॥ श्रसंसत्तो गिहुच्चेहिं, श्रशिकेन परिवर् ॥ १७॥ सुसाले सन्नगारे वा, स्टब्समुले च पगुन ॥

सुसार्व सुझगारे वा, स्ट्ब्समूर्व च एगज ॥ अकुक्कुज निसीयुङ्जा, न य विचासर् पर ॥ २० ॥ तथ्य से श्रश्यमाणस्त, जवसगानिधारए ॥

(२८) वृटक श्रध्ययनो√ संकाजीर्ज न गरेजा, उठिता खन्न-मासर्ष ॥ २१ ॥ उचावयाहिं सेझाहिं, तवस्तीनिरखु थामवं ॥ नाइवेखं विद्नेजा, पावदिनी विद्नुह 🕠 ॥ ११ ॥ परिक्कुवस्तयं लक्कु, कल्लाणं श्रमुव पात्रगं ॥ कि नेगराइ करिस्सइ, एवं तथ्य हियासए ॥ १३ ॥ श्रवकोसेज परो ज़िरुखु, न तोसि पिनसजले ॥ सारिसो होइ वाखाण, तम्हा निरुख न सज्जे॥१४॥ सोद्यार्षं फहला जासा, दारणा गामकंटगा ॥ त्रसिणीज जवेहिजा, न तार्ज मणसी करे ॥ १५ ॥ इर्ज न सजले सिरस्तू, नर्णपि न पर्वसए ॥ तितिरखं परम नद्या, निरुखु धम्म विचितए॥ १६॥ समण सजयं दंतं, इणिङ्का कोइ कन्नई ॥ निञ्ज जीवस्स नासोत्ति, एव पेहेला संजए ॥ १७ ॥ मुक्करं खद्ध जो निशं, ग्रणगारस्स जिल्लुणो ॥ सबं से जाइय होर, नित किंचि श्रजारयं ॥ २०॥

गोयरग्ग पविठस्त, पाणी नो सुप्पसारए ॥ सेर्ड अगार वासोत्ति, इइ जिल्लू न चिंतए ॥ २७ ॥ परेसु घास मेसेजा, जोयणे परिनिष्ठिए ॥ खक्के पिंके असके वा, नाणुतप्येक्त पंकिए ॥ ३० ॥

उत्तराध्ययतुं वीजुं श्रध्ययन. (१ए) श्रज्ञोवाहं न खप्जामि, श्रविक्षान्नो सुप सिया ॥ जो एवं पिन संचिरके, श्रक्षान्नो तं न तज्जए ॥ ३१ ॥

जो एवं पिन संचिखे, श्रद्धाजो तं न तजाए ॥ ३१ ॥ नचा उप्पच्चं छुखं, वेयणाए छुद्द् ठिए ॥ श्रदीणो थावए पन्नं, पुठो तठ हियासए ॥ ३१ ॥ तिगिर्व नाजिनंदेजा सचिखेत गवेसए॥

श्राचेदागस्त द्वृहस्त, संजयस्त तवस्तिषो ॥ तपेतु सुयमापस्त, होज्ञा गाय विराहणा ॥ ३४ ॥ श्रायवस्त निवाएणं, श्रायदा हवद्र वेपणा ॥

एयं खु तस्स सामन्नं, जं न कुद्धा न कारवे॥ ३३॥

प्वं नचा न सेवति, तंतुजं तण तिनया ॥ ३५॥ किवनगाय मेहावी, पंकेण य रयेण वा॥ धिंतु वा परियावेण, सायं नो परिदेवए ॥ ३६॥ वेइज निक्जरापेही, ष्यारिय धम्म मणत्तरं॥

जाव सरीर जेरूनि जब्ब काएण धारए ॥ ३७ ॥ श्रजिवायण मण्जुटाणं, सामी कुजा निमंत्रणं ॥ जे ताइ पिमसेवति, न ते सपेह्ए मुणी ॥ ३० ॥ श्रजुकसाई श्रप्थिते, श्रजाएसी श्रद्धोद्धए ॥ रसेसु नाणुगिर्येजा, नाणुतप्पेज्ञ पन्नवं — ॥ ३७ ॥

सेनूलं मण पुदं, कम्मा नालका

वृटक श्रध्ययनो 🐬 **(**₹¤) जेपाऽहं नानिजापामि, पुछो केपाइ कन्हुई॥ ४०॥ श्रह पद्या नइज्ञंति, कम्मा ऽनाणफखा कमा ॥ एव-मरतासि खपाएं, नज्ञा कम्मविवागयं ॥ ४१ ॥ निरहगंमि दिग्जं, मेहुणार्च सुसबुमो ॥ जो सकं नाजिजाणामि, धम्मं कहुदाल पावमं ॥४२॥ तवोवहाग-मादाय, पिनमं पिनवज्ञर् ॥ एचपि विहरत में, ठउम न लियडर्र ॥ धर ॥ निक्र नृष परखोष, इही दावि तवस्सिणो ॥ श्रद्धरा वंवित्तमिनि, इ.इ. निरुख़ न विंतए ॥४४॥ श्चनु निणा श्रति निणाः श्रद्धवर्गि निवस्सई ॥ मुसते एव- माहसु, इ इ जिल्लू न चितए ॥ ४५ ॥ ए ए परीसहा सक्वे, कासवेएं पर्वेइया ॥ जे जिस्कून विद्वेलें जा, पुछी केणइ कन्द्रइ ति वेमि।४६। चत्तारि परमंगाण इख्नहाणीह जंतुणो ॥

माणुसत्तं सुई सद्धाः सजमंमि य वीरियं ॥ १ ॥ ससावत्राण संसारे, नाणा गोत्तासु जाइसु ॥ कम्मा नाणाविदा कडु, पुढो विस्संत्रया पया ॥ १ ॥ एगया देवलोपसु, नरएसुवि एगया ॥ एगया आसुरंकायं, श्रदाकम्मेहिं गद्यह् ॥ ३ ॥

उत्तराध्ययननुं त्रीजुं अध्ययनः (38) एगया खतियो होइ, तर्ज चंनाख बोकसो ॥ तर्रं कीम पर्यगो या तर्र कुंधुं पिपीलिया ॥ ध ॥ एव-माहव जोणीसु, पाणिणो कम्म किविसा ॥ न निविद्धांति संसारे, सब्देसुव खित्तवा ॥ ५॥ कम्मसंगेहिं संमूहः, इिक्तया वह वेयणा ॥ श्रमाणुसास जोषोस, विणिहम्मति पाणिणो ॥ ६॥ कम्मार्षे तु पहाणाप, श्राणपुत्री कयाइछ ॥ जीवा सोहि-मणुपता, आययंति मणु । यं ॥ ३ ॥ माणुन्सं विग्गह बध्धं, सुई धामस्स छुटबहा ॥

नाणुस्त विग्नेह विश्वा सुद्ध विग्नस्त अव्यक्ष ॥ व ॥ वं सोचा पित्रवज्ञांति, तव खंति-महिंसयं ॥ व ॥ श्राह्य सवणं खच्छु, सद्ध, परम अव्यवहा ॥ सोचा नेयाज्यं मग्नं, वह्ने पित्रसर्वर्द ॥ ए ॥ सुद्धं च खच्छुं सद्धं च, वीरिय पुण अव्यवहं ॥ यह वे रोयमाणावि, नो यणं पित्रवज्ञप ॥ १० ॥ माणुसन्तिम आयाजं, जो धन्मं सोच सद्दे ॥ दत्स्ती वीरियं विश्वु, सदुर्भ निष्णे रयं ॥ ११ ॥ सोही जव्जुनुयस्स, धम्मो सुद्धस्त चिन्नई ॥

॥ १२ ॥

निवाण परमं जाइ, घव सिनेव पावए

विगिच कम्मुणे। हेउं, जस संचिणु स्नित्ए त

(३१) 🔻 तृहेक श्रध्ययनं। पाढवं सरीरं हिचा छहं पक्षमह दिसं 📌 ॥ १३॥ विसावसेहि सीवेहि, जस्का उत्तर उत्तरा ॥ महासुक्काव दिप्पंता, मझंता अपुणचर्य ॥ १४॥ श्रप्या देव कामाणं, कामरूव विजविणो ॥ चहं कप्पेस चिठंति पुदा वास सया वहू ॥ १५ ॥ तम्र विद्या जहा वार्ष जस्का श्रावस्कर चुया ॥ ज्वेति माणुस जोणिं, से दसगेऽजिजायइ ॥ १६॥ खेनं वहु हिरझ च पसवी दास पोरुसं ॥ चतारि काम खर्धाण, तह से हववलए ॥ १७ ॥ मित्तवं नाइव होइ, उचागोए य वज्नव ॥

ब्राप्पायंके महापने, श्राप्तजाये जसी बले ॥ १७॥ जुज्ञा माणुस्तए क्रोए, अप्पनिरूवे अहालयं ॥ प्रव विसुद्ध सद्धन्मे, केवल बोहि बुझिया ॥ १ए ॥ चर्चरंगं खुल्खहं नचा, संजमं पिनविज्ञिया ॥ तवसा ध्रय कम्मंसे सिद्धे इवए सासए नि बोम ॥ ब्रसंखय जीविय मा पमायए. जरोवणीयस्स हु निष्ठ ताणं ॥ एवं वियाणाहि जणे पप्तते । किं नु विहिंसा अजया गहिति॥ १॥

उचराध्ययननुं चोधुं अध्ययनः 😘 जे पावकम्मेहिं घणं मणुसा, समाययंती खमयं गहा य ॥ पहाय ते पास पयहिए नरे, वेराणुवद्धा नरयं जविति 1121 तेणे जहा संधिमुहे गईीए, स कम्मुणा किञ्चइ पावकारी ॥ एवं पया पेच इहं च लोए, कमाण कम्माण न मोक श्राष्ट्र ॥ ३॥ संसार-मावन्न परस्स अठा, साहारणं जं च करेइ कम्मं ॥ कम्मस्स ते तस्त उवेय काले, न वंधवा बंधवयं जविति ทยท वित्तेण ताण न खने पमते. इमंमि सोए **अडुवा पर**हा ॥ दीवपणहेव अणंतमोहे, नेयाज्यं दहु--मदहु--मेव ાયક सत्ते सुयावि पिनवृद्धजीवी, न बीससे पनिय आसुपन्न ॥ घोरा मुहत्ता अवलं सरीर.

(३४) त्रुटक अध्ययनो, नारंमपर्कीव चरे ऽप्पमनो

चरे पयाई परिसंक्माणो, जं किंचि पास इह मन्नमाणो ॥

नं किंचि पास इह मन्नमाणो ॥ खान्नतरे जीविय बृहङ्सा, पद्मा परिचाय मलावर्धसी

वदं निरोहेण जवेह मोस्कं, श्रासे जहा सिस्किय वम्मधारी ॥

पुद्राई वासाई चरे ऽप्पमत्तो, तम्हा मुणी खिप्प-मुवेङ् मोरकं ॥ ज॥

11 & 11

11 9 11

स पुब-मेव न सनेक्स पद्या, प्सोवमा सासयवाश्याण ॥ विसीयई सिडिबे व्याउपंति,

विसायइ।साढल श्राजयाम, कालोवणीए सरिरस्स जेए ॥ ए॥ खिप्प न सकेइ विवेग-मेर्ज,

खिप्प न सक्केड् विवेग-मेर्छ, तम्झा समुठाय पहाय कामे सम्मेच खोगं समया महेता, ख्रप्पाण रक्कीच चरे ऽपमत्तो ॥ १०॥

मुहु मुहुं मोहगुणे जयंत, झालेगरूवा समणं चरत ॥ वत्तराध्ययनतुं पांचमुं छाष्ययन. (३५) फासा फुर्सित छासमंजसं च, न तेसु जिल्लू मणसा पर्वसे ॥ १९॥ मदाय फासा बहु खोह्णिज्जा, तहप्पारेसु मणं न कुज्जा॥

तह्प्पारसु मण न कुक्ता ॥
रस्केक्त कोहं विषापक्त माणं,
मायं न सेवेक्त पहेक्त कोहं ॥ ११ ॥
जे संखया तुच्च परप्यवाई,
ते वेक्त दोसाण्यापा परसा ॥

ए ए छाइ-स्मोति छुगठमाणा, कंखे गुणे जाव सरिरस्त जेन ति वे मि ॥१३॥ ज्ववंति महोहंति, एगे तिवे फहनो ॥

श्रन्नवंसि महोहंसि, एगे तिन्ने जुरुतरे ॥ तृत्र एगे महापन्ने, इमं पण्ह-सुदाहरे ॥ १ ॥ संतिमेय छुवे गुणा, श्रुकाया मार्ग्युतिया ॥

अकाममरण चेव, सकाममरणं तहा ॥ १॥ बालाणं अकामं तु मरणं असय ज्ञवे॥ पंशियाणं सकामं तु, उक्षोसेण सयं ज्ञवे ॥ ३॥

पित्रवाण सकाम तु, उकासण सय जर्व ॥ ३॥ तिष्ठमं पढमं ठाण, महावीरेण देनियं॥ काम गिद्धे जहा वाले, जिस कुराई कूवई ॥ ४॥ जे गिद्धे कामजोषेषु एगे कूनाय गर्छई॥

```
(३६)
           वृटक अध्ययनो
न मे दिष्ठे परेलोए, चरुख़दिष्ठा इमा रई ॥ ५॥
हजागया इमे कामा, काहिया जे व्यवागया ॥
को जाणइ परेलोए, छाज्ञ वा नज्ञि वा पुणो ॥ ६ ॥
जरेगण सन्दि होस्कामि इ इ वाले पगवर्ड ॥
कामचोगाणुराएण, केसं सविनवज्जई
                                       n e n
तर्र से दंद समारजङ, तसेस थावरेस य ॥
श्राहाए य श्रापहाए, जूयगाम विहिस्तई
                                       n 6 n
हिसे बाले मुसाबाई, माइल्ले विसुषे सह ॥
जुजमाणे सुरं मसं सेय-मे यति मन्नई
                                      nen
कायसा वयसा मत्ते, नित्ते गिळे अ एडिसु ॥
ज्ञहर्र मलं सचिणुइः सिम्रनागोद्य महियं
                                     11 50 11
तर्र प्रहो आयकेण, गिलाणो परितप्पई॥
पन्नी व परलोवस्त, कम्माणुष्पेहि श्रव्णो ॥ ११ ॥
सुया मे नरए ठाणा, श्रसोखाणं जागई॥
बालाएं क्ररकम्माण, पगाडा जञ्च वेयणा ॥ १२ ॥
तज्ञीववाइयं जाण, जहा मे त-मणुस्सुय ॥
श्रहाकम्मेहिं गछतो, सो पद्या परितप्पई
                                     u 33 u
```

जहा सागभिन्न जाण, सम्मं हिचा महापहं ॥ . सग्म मोहन्नो, श्रस्के जग्मिम सायई ॥ १४ ॥

जत्तराध्ययनुं पांचमु श्रान्ययन (३०) एव धम्म विद्यक्रमा, श्रहममे पुनिविज्ञाया ॥

वाले मशु सुई पत्ते, ऋरके न्नगेव सोयई ॥ १५ ॥ तम्र से मरणंतीम, वाले सतस्तई नया ॥ श्रकाममरणं मरइ, धुत्तेव कलिणा निष् ॥ १६ ॥ एवं श्रकाममरणं, वालाणं सु पवेइयं ॥ एवं श्रकाममरणं, प्रकिशणं स्रोह से ॥ १९ ॥

ष्यं श्रकाममरणे, वालाणं तु पवेइयं ॥ षत्तो सकाममरणं, पिनवाणं सुषेह मे ॥ १९ ॥ मरणि सपुत्राणं, जहा मे त–मणुस्तुय ॥ विष्पसन्न–मणाधायं, सज्ञयाणं बुसीमर्ग ॥ १० ॥

न इमं सबेसु जिख्नुस्, न इमं सबेसु गारिसु ॥ नाणासीखा श्रमारजा, विसम सीखा य जिल्हुणो॥१ए॥ सित एगेहि जिल्ह्बुह्, गारज्ञा संजमुत्तरा ॥ गारजेहि य सबेहि, साहवो संजमुत्तरा ॥ २० ॥ चीराजिणं निर्णिणं, जमी संवामि मुंमिण ॥ एयाणिवि न सायंति, ज़स्सीख परियागय ॥ ११ ॥

प्याचीय प्रसिद्धाः, बुरुराव परिवाचय ॥ २१ ॥ पिंमोलएव डुस्सीले, नरगाउं न मुचई ॥ जिस्काए वा गिद्दे वा, सुदए कम्मइ दिवं ॥श्श॥ श्रमारि सामारुयंगाई, सही काएण फासए ॥ पोसह डुहर्ड पर्स्क, एग राइ न हावए ॥ श्र एवं सिस्का समावने, गिहवासेवि सुदए ॥

(३७) नृटक अध्ययनो मुच्चइ ठवि पवार्छ, गर्छे जस्क सखोगयं ॥ थह जे सबुने निरखु, जुन्हें अन्नयरे सब दुरक प्पद्दीणे वा, देवें वावि म उत्तराइ विमोहाइ, जुड़मताणु पुवसी । समाइन्नाइ जरकेहिं, श्रावासाइ ज... दीहालया इहिमता, समिद्धा श्रहणोववत्र सकासा, जुल्लो श्रह्म ताणि ठाणाणि गइति, सिकिता जिस्काए वा गिड़ हो वा, जे सति तेसि सोचा सपुडाए, र न संतलित मरणते, सीववता त्रक्षिया विसेस-मादाय, विष्पसीइज मेहावी, तहा ज

तर्ज काले श्राजित्येए, सही विषाएका लोमहरिस, जेय श्रह कालमि सप्ने, जा सकाममरण मरइ, तिष्ह जावति ऽविक्ता पुरिसा सर्वे वहसो मुद्दा, ससा

उत्तराध्ययनन् छतुं अध्ययन. (રૂણ) समिरक पंनिए तम्हा, पास जाइपहे वह ॥ अपूर्णा सञ्च-मेसेना, मित्तिं नृष्सु कप्पेष ॥ १ ॥ माया पिया न्हुसा, जाया जजा पुत्ता य र्रुसा ॥ नार्खं ते मम तालाय खुष्पं तस्स सकम्मुणा ॥ ३ ॥ एय मर्छ सपेहाए, पासे समियदंसचे ॥ ठिंदे गेहिं सिणेहं च, न कंखे पुत्र संथवं 11 8 11 गवासं मणिकुमलं, पसवी टास पोहस ॥ सब मेय चइताण, कामरूवि जविस्तति 11 U II यावरं जगमं चेव, वण धन्नं उवस्कर ॥ पज्ञमाणस्स कम्मोहे, नाल इस्कान मोयणे ા દા श्रद्यं सव्ह सव, दिस्स पाणे पियायए ॥ न हुए पाणियो पासे, जय वेराठ उवरए n g n श्राचाण नरयं दिस्स, नायइन तणामवि ॥ दोग्रंठी श्रपणो पाए. दिन जुजेन नोयणं ម ខេ ម इह-मेगेन मझंति, अपद्यकाय पावगं ॥ श्रायरिय विदित्ताणं, सत दुस्का विमुचई ॥ ए ॥ जलता अकरिंता य, वंध मोस्क पर्वत्रिणो ॥ वाया विरियमिनेण, समालासंति अप्पन ॥ १०॥ न विना तायए जासा. कड विज्ञाणसासणं ॥

(३७) त्रटक श्रध्ययनो मुच्चर ठवि पवार्च, गर्छे जस्क संबोगयं ॥ १४ ॥

श्चह जे सबुने जिरसू, छुन्हं श्चन्नयरे तिया॥ सब हुस्क प्यहीषे वा, देवे वावि महिहिए॥ १५॥ **उत्तराई विमोहाई, जु**इमताणु पुरसो ॥

समाइन्नाई जरकेहि, खावासाइ जसंसिखी ॥१६॥ दीहाज्या इहिमता, समिद्धा कामरूविणी ॥

श्रहुणोववत्र सकासा, जुज्जो श्रचिमालिपन्ना ॥१॥ नाणि नाणाणि गद्यति, सिस्किता सजम तत्र ॥

जिस्काए वा गिइछे वा, जे सति परिनिब्दुमा ॥१०॥ तेसिं सोचा सपुजाण, सजयाण युसीमर्ग ॥

न संतस्ति भरणते, सीखवता बहुस्सुया ॥ १७ ॥ त्रुलिया विसेस-मादाय, दयाधम्मस्स खितए ॥ विष्वसीइज मेहावी, तहा जूएण खप्पणा ॥३०॥

तर्र काले अनिष्पेष, सही तालिस-मंतिए॥ विणएक लोमहरिस, नेय देहस्स कराए ॥ ३१ ॥ श्रह काछमि संपत्ते, श्राघाया य समुस्सय ॥

सकाममरण मरइ, तिष्ह -मत्रयरं मुणि तिवेमि।३१। जावति ऽविज्ञा पुरिसा सबे ते छन्कसन्नवा॥ व्यवंति बहुसी मूडा, ससारंमि श्रणतगे॥ १॥

उत्तराध्ययननुं हद्वं ऋध्ययन. (३ए) समिक पंभिए तम्हा, पास जाइपहे बहू ॥ श्रवणा सञ्च-मेरोजा, मित्तिं जूपसु कर्पेए ॥ १॥ माया पिया न्हुसा, जाया जजा पुत्ता य र्जरसा ॥ नाखं ते मम ताणाय हुप्पं तस्स सकम्मुणा ॥ ३ ॥ एय महं सपेहाए, पासे समियदंसणे ॥ हिंदे गेहि सिणेहं च, न कंखे पुद्व संयव 11 8 11 गवासं मणिकुमलं, पसवी वास पोरुस ॥ सब भेयं चड़ताण, कामरूवि जविस्तति ાયા थावरं जगमं चेव, ध्रण धन्नं उबस्करं ॥ पद्माणस्स कम्मोहि, नाल फुस्कान मोयणे ા દ્વા श्रदार्व सद्य सद, दिस्स पाणे पियायए ॥ न हुए पाणियो पासे, जय वेरान जवरए 11 9 11 श्रायाणं नरयं दिस्स, नायइज्ञ तणामवि॥ दोग्रंठी खपपो पाए, दिन्नं चुंजेन नोयप 11 0 11 इह-मेगेन मझंति, अपशस्काय पावगं ॥ व्यायरियं विदित्ताण, सब दुस्का विमुचर्ड 11 12 11 जणता श्रकरिता य, वंध मोस्क पर्वत्रिणो ॥ वाया विरियमिनेण, समातासंति ऋष्वगं ॥ १०॥ न वित्ता तायए जासा, कड विज्ञाणुसासण ॥





वृटक श्रध्ययनो (8a) विसन्ना पावकम्मेहिं, वाला पंक्तिय माणिणो ॥ ११ ॥

जे केइ सरीरे सत्ता, वज्ञे रूवे य सबसो ॥

मणसा काय बकेणं, सबे ते छस्क संजवा ॥ १२ ॥

श्रावन्ना दीह- मद्धाण, संसारंमि श्रर्णत्ए ॥

तम्हा सब दिस परस, छप्पमनो परिवय ॥ १३ ॥ बहिया जद्र-सादाय, नावकंखे कयाइवि ॥

पुरकम्म खयहाय, इस देहं समुद्धरे H 48 H

विगिच कम्मुणो हेञ, कालकंखी परिवर ॥ मायं विकस्ते पाणस्स, कर्न लध्यूण जस्कए॥ १५ ॥

सनिहिं च न कवेजा. लेवमायाड संजए ।। परकी पत्त समादाय, निरविस्की परिवय ॥ १६ ॥

प्सपासमिर्व खज्जू, गामे छारायत चरे ॥ कारणम्त्रो पमत्रेहिं, विमवाय गवेसए ॥ १७ ॥

(काच्यम) एवं से चदाहु अणुत्तर नाणी. श्रणुत्तर देसी श्रणुत्तर नाण दसण धेरे ॥ श्चरहा नायपुत्ते प्रयव.

वेसाखिए वियाहिए ति वेमि भ रुष्ट भ

॥ समाप्तम् ॥

